International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 949-950

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 949-950
www.allresearchjournal.com
Received: 02-06-2017
Accepted: 13-07-2017

डॉ0 गीता परिहार
एसोसियेट प्रोफेसर, अध्यक्षा, संस्कृत विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 अंशु सरीन
एसोसियेट प्रोफेसर, अध्यक्षा, बी0एड0 विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 सीमा रानी
एसोसियेट प्रोफेसर, अध्यक्षा, बी0एड0 विभाग डी0ए0के0 कॉलिज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 गीता परिहार
एसोसियेट प्रोफेसर, अध्यक्षा, संस्कृत विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्यः स्त्री शिक्षा

डॉ0 गीता परिहार, डॉ0 अंशु सरीन एवं डॉ0 सीमा रानी

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति हमेशा से नारी शक्ति की पूजा को महत्त्व देती आयी है। ऋषि, मुनियों की मान्यता है कि जहाँ स्त्री को सम्मान मिलता है वहाँ देवता विद्यमान रहते हैं। प्रारम्भिक समय से ही नारी अपनी शक्ति के कारण सम्मान की अधिकारिणी रही है। वैदिक काल की ऋषिकाऐं हो या भारत एवं विश्व भर के देशों से अवतरित हुई सेवा–धर्म की साधिकाएं हो अथवा समाज–सेवी एवं शौर्य पराक्रम से परिपूर्ण विभिन्न प्रतिमाएं हो विभिन्न रूपों में नारी शक्ति ने संस्कृति पटल पर जो छाप छोड़ी है उसी से हमारी संस्कृति विनिर्मित है। नारी विकास या स्त्री विकास का यह गौरवमय पक्ष पूज्य गुरूदेव श्रीराम शर्मा आचार्य जी की लेखनी से अमृत बनकर उभरा है।

आज जब चारों ओर स्त्री शक्ति को पददलित किया जा रहा है, उसकी अवहेलना व अवमानना हो रही है स्त्री शक्ति के नाम पर स्त्री का आत्मबल उभरकर सामने नहीं आ सक रहा है, ऐसे समय पर आचार्य जी के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचार स्त्री शक्ति को बल देंगे जिसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है। जिस समाज में दहेज के नाम पर बहुँए जला दी जाती है। जिस देश में सम्प्रदाय एवं वर्ग भेद के नाम पर अत्यधिक शोषण एवं अत्याचार होता है जहाँ पुरूष का पुरूषत्व बलात्कार के रूप में सामने आ रहा है। इस आधुनिकतम कहे जाने वाले समाज में स्त्री के शाश्वत स्वरूप को लौटाने और उसका जननी, मातृशक्ति के स्वरूप को सामने लाने हेतु आन्दोलित विचारों एवं प्रेरणाओं की महती आवश्यकता है वह सब गुरुदेव के विचारों में स्पष्ट दिखाई देता है। इन विचारों के माध्यम से स्त्री शक्ति का वह स्वरूप सामने आयेगा जिसमें स्त्री शिक्षा के माध्यम से स्त्री सत्ता प्रधान समाज की परिकल्पना पूर्ण होगी। आचार्य जी का जीवन स्त्री जागृति प्रेरणाओं से परिपूर्ण है।

आचार्य जी का कहना है कि देश, धर्म, समाज, संस्कृति एवं विश्व मानवता के प्रति हमारे कर्त्तव्य है उनको पूर्ण करने में सर्वप्रथम दायित्व यह है कि स्त्री को पिछड़ी स्थिति में डालने वाले प्रतिबन्धों को समर्थन न दे ऐसा करने से जो आत्मिक शक्ति जागृत होगी उसका लाभ समस्त समाज को प्राप्त होगा। विकसित स्त्री देश की अर्थव्यवस्था में, समाज के सन्तुलन में, शिक्षा में, प्रगति में, कला में, संस्कृति में योगदान दे सकती है। स्त्री के सम्बन्ध में संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाकर हम समस्त संसार का अहित करते हैं। उपेक्षा और पिछड़ेपन ने स्त्री की क्षमता एवं उल्लास को कुंठित किया। स्त्री की विचार पद्धति में प्रगतिशीलता को जोड़ा जाए तब वह समाज के उत्कर्ष में सहायक सिद्ध हो सकती है।

आचार्य जीके अनुसार स्त्री को परिवार–संस्था के विकास में, सामाजिक प्रगति में तथा व्यक्तिगत सहयोग और अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु मौलिक अधिकारों की प्राप्ति करनी होगी। यह सब शिक्षा के आधार पर ही प्राप्त हो सकते हैं। शिक्षा मनुष्य की बहुमूल्य सम्पदा है जिससे मनुष्य विचारशील बनता है। रोटी के बिना शरीर की और शिक्षा के बिना मस्तिष्क की गति अच्छी नहीं होती। इसी कारण स्त्री शिक्षा की उपेक्षा करना स्त्री को मानसिक दृष्टि से अपंग बना देता है। श्रीराम शर्मा जी कहते हैं कि अशिक्षित स्त्रियों को घर पर ही शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिलनी चाहिए। आचार्य जी कहते हैं कि मात्र स्कूली पढ़ाई ही शिक्षा की सीमा नहीं है यह तो प्रारम्भिक प्रवेश द्वार है स्त्री को अपने व्यक्तित्व के विकास एवं कर्तव्य निर्वाह के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान होना चाहिए। सामाजिक कुरीतियाँ, मूढ़ मान्यताऐं, अवांछनीयताएं स्त्री शक्ति को नष्ट कर सकती है। स्नेह सौजन्य का अभिवर्द्धन, उतार चढ़ावों के बीच सन्तुलन स्थिति बनाये रखने हेतु, शिशु पालन, दाम्पत्य जीवन में, परिवार में, भावनात्मकता को प्रबल करने के लिए स्त्री शिक्षा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। आचार्य जी स्त्री को शिक्षित एवं स्वावलम्बी बनाकर मजबूत करना चाहते थे।

क्रिया–कौशल का व्यावहारिक शिक्षण

आचार्य जी बौद्धिक शिक्षण के अतिरिक्त व्यावहारिक शिक्षण के पक्षधर थे जिसके आधार पर व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं परिमार्जित कर प्रगति पथ पर आगे बढ़ सके।

स्त्री के द्वारा अधिक उपार्जन की क्षमता विकसित करने की प्रक्रिया को प्राथमिकता मिलनी चाहिए जिससे प्रत्येक नारी में स्वावलम्बन की क्षमता का विकास हो सके इससे आत्मविश्वास की भावना बढ़ती है। रचनात्मक कार्य करने से, अभ्यास से कुशलता में वृद्धि होती है। आचार्य जी के अनुसार स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप स्त्री को घरेलू शाक–वाटिका, मधु–मक्खी पालन, साबुन बनाना, सिलाई, कताई, बुनाई, अगरबत्ती बनाने जैसे कामों की शिक्षा देनी चाहिए।

स्त्री अपने बच्चे की न केवल शरीर की, वरन् उसके स्वभाव और भविष्य की भी निर्माता है। वह परिवार की अधिष्ठात्री व निर्मात्री है। शिक्षा के बल पर अपने व्यक्तित्व और कर्त्तव्य से सम्पूर्ण समाज की सेवा कर सक्षम उदाहरण प्रस्तुत कर सकती है।

सृजन प्रयोजन हेतु स्त्री शिक्षा

नव जागरण की दिशा में स्त्री को बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। इस कसौटी पर स्त्री तभी खरी उतरेगी जब वह बन्धनों से जकड़े रहने से पैदा हुए पिछड़ेपन से मुक्ति पाकर अपनी योग्यता व क्षमता को विकसित करेगी। अपने विकास हेतु उसे स्वयं संघर्ष करना होगा। समाज में फैली रुढ़ियों से निपटना होगा।

आचार्य जी कहते हैं कि यह सब कठिन अवश्य है लेकिन स्त्री शिक्षा के बल पर इस कार्य को अवश्य कर पाएगी। परिवार को सुविकसित, सुसंस्कृत बनाने हेतु योग्यता और सूझबूझ की आवश्यकता है और उसे पूर्ण करने हेतु स्त्री शिक्षा की। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बन तीनों मोर्चो पर शिक्षा के माध्यम से ही आगे बढ़ना होगा।

समाज उत्थान हेतु स्त्री शिक्षा

हमें अपने देश और समाज को सुदृढ़–समुन्नत बनाना है और देशवासियों को चरित्रवान और प्रतिभावान देखना है तब व्यक्ति और समाज को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली परिवार संस्था को, सद्गुणों और श्रेष्ठ संस्कारों से सजाना होगा और महत्त्वपूर्ण है इसमें स्त्री शिक्षा।

युग परिवर्तन हेतु स्त्री शिक्षा

वर्तमान समय में वैयक्तिक जीवन, पारिवारिक जीवन, सामाजिक विश्रृंखलता, नैतिक पतन, राजनैतिक विप्लव, धार्मिक अन्धानुकरण व अधार्मिकता आज के जीवन में घुन की भांति लग गए हैं। शिक्षा के माध्यम से स्त्री सजग होकर स्वतन्त्रता, धार्मिकता एवं मर्यादा की प्रहरी बन सकती है। स्त्रियाँ शिक्षित होंगी तो समाज स्वतः सुधर जायेगा। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, नैतिक, शैक्षणिक पुनर्संगठन करते हुए शिक्षित स्त्री जिस पथ का निर्माण करेगी, वह पथ बहुत ही सुगम और आध्यात्मिक होगा।

शिक्षित समाज के लिए स्त्री शिक्षा

जब तक नारियों को प्रगति के अवसर नहीं मिलेंगे तब तक समाज भी आगे नहीं बढ़ सकेगा। नारी मनुष्य की माँ है और जब माँ ही रुग्ण दीन होगी तो उसकी संतान स्वस्थ और समर्थ कहाँ से होगी ? अतः निकटवर्ती जनों को अपना कर्त्तव्य समझकर नारी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए उसकी सहायता करनी चाहिए।

विषमताओं से घिरी भारतीय स्त्री हेतु शिक्षा

भारत की वह महिलाऐं जो पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों में जकड़ी है। आधुनिक युग से बहुत दूर है। अपनी रूढ़िवादिताओं को किसी मूल्य पर भी छोड़ने को तैयार नहीं है। आचार्य जी इन विषमताओं को मिटाने का आधार समुचित शिक्षा का प्रचार प्रसार मानते हैं। शिक्षा ऐसी हो जो भारतीय नारी के अन्तर्मन को आलोकित कर सके। इससे भारत में ही नहीं, विश्व में भी सुख शान्ति का साम्राज्य फैलेगा। इस महान प्रयास में विचारशील नर और नारी दोनों वर्गो को मिलकर प्रयत्न करना चाहिए तभी स्त्री जाग्रत बनेगी।

प्राचीन भारत की प्रगति का मर्मः स्त्री शिक्षा

विद्वता और शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय नारी प्राचीन काल से ही आगे है। गार्गी और याज्ञवल्क्य का, जनक और सुलभा का, शंकराचार्य और देवी भारती का शास्त्रार्थ सर्वविदित है। सन्तति निर्माण में माता की भूमिका पिता से हजार गुना अधिक है। देवी अशिज के पुत्र कांक्षिवान्, भरत–शकुन्तला, लवकुश–सीता आदि अनेक उदाहरण है। इसीलिए राष्ट्र की प्रगति हेतु अतीत काल की तरह मातृशक्ति को पुनः प्रतिष्ठित करना पड़ेगा। भारतीय धर्मशास्त्रों में भी स्त्री की गरिमा को बनाए रखने हेतु शिक्षा को अनिवार्य माना जाता रहा है।

सर्वांगीण सामाजिक प्रगति का आधारः स्त्री शिक्षा

व्यक्ति एवं समाज को ऊँचा उठाने में अनेक घटकों का योगदान होता है। शिक्षाशास्त्री, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री सुख–सुविधाओं के संवर्द्धन तथा समाज की सुव्यवस्था एवं शालीनता बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करते है। भौतिक विकास में इन सबका सहयोग आवश्यक है और महत्त्वपूर्ण भी, परन्तु व्यक्ति एवं समाज में उदारता, शालीनता एवं सदाशयता की बीजारोपण करने में मातृ शक्ति का स्थान सर्वोपरि है। देवी देवताओं में माँ को सर्वोत्तम सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। अनेको देवियों की पूजा आराधना के पीछे एक ही दर्शन काम करता है– मातृसत्ता के प्रति असीम श्रृद्धा भाव का विकास करना।

नीतिशास्त्र में एक प्रश्न किया गया–पृथ्वी से भी बड़ा कौन? इसका उत्तर देते हुए ऋषि कहते है–पृथिव्या माता गरीयसी माता पृथ्वी से बड़ी है। समाज में श्रेष्ठता व शालीनता के संस्कारों का बीजारोपण करने हेतु स्त्री शिक्षा अनिवार्य है। मातृत्व पद की पावन प्रतिष्ठा को स्थापित करेंगे तभी आवश्यकता पड़ने पर नारी देश की रक्षा और समाज संचालन के कार्यो को नेतृत्व भी कर सकती है और मानव समाज का गौरव ऊँचा कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य शर्मा, पं0 श्रीरामः महिला जागरण को उद्देश्य प्रकाशकः युग निर्माण योजना, मथुरा।
2. आचार्य शर्मा, पं0 श्रीरामः नारी उत्थान की समस्या और पण्डया डा0 प्रणव (एम0डी0) समाधान प्रकाशकः युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।
3. सम्पादक, ब्रह्मवर्चसः 'यत्र नार्यस्तुपूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' प्रकाशकः अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
4. सम्पादक, ब्रह्मवर्चसः 'इक्कीसवी सदी नारी सदी' प्रकाशकः अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
5. सम्पादक, ब्रह्मवर्चसः 'युगदृष्टा का जीवन दर्शन' प्रकाशक–अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
6. शर्मा, भगवती देवीः महिला जागरण की दिशा धारा प्रकाशक–गायत्री तपोभूमि, मथुरा।